वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 33 (वीर नि. संवत् - 2540) 374 अंक : 2

आतमरूप अनुपम है...

आतमरूप अनुपम है, घटमाहिं विराजै।
जाके सुमरन जाप सो, भव भव दुःख भाजै हो।।
केवल दरशन ज्ञानमै, थिरतापद छाजै हो।
उपमाको तिहुं लोक में, कोउ वस्तु न राजै हो।।
आतमरूप अनुपम है...।।१।।

सहै परीषह भार जो, जु महाव्रत साजै हो।
ज्ञान बिना शिव ना लहै, बहुकर्म उपाजै हो।।
आतमरूप अनुपम है...।।२।।

तिहुं लोक तिहुं काल में, नहिं और इलाजै हो।
'द्यानत' ताको जानिये, निज स्वारथ काजै हो।।
आतमरूप अनुपम है...।।३।।

– कविवर पण्डित द्यानतरायजी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की 125वीं जन्मजयन्ती के अवसर पर उनके प्रवचनों में से महत्वपूर्ण 125 अंशों को पाठकों के लाभार्थ यहाँ क्रमश: प्रकाशित किया जा रहा है।

(56) हे आत्मा ! बाह्य जंगल अथवा वन में भी शान्ति नहीं है, इसलिए अन्तररूपी जंगल में अपने सहज ज्ञानानन्दरूपी वन की अनुभवनीय सुवास लेकर स्वाधीन हो जा ! बाह्य में स्वाधीनता कहीं से भी नहीं मिलती।

– आत्मधर्म : अप्रैल 1981, पृष्ठ 2

(57) भाई ! यदि तुझे सुख की धकस (सम्यक् अभिलाषा) लगी हो तो समस्त परापेक्षता की भावना से रहित होकर अपने ध्रुव स्वरूप का आस्वादन कर। वस्तु के परिणमन की भी चिन्ता मत कर, उस पर से भी अपनी दृष्टि को हटा ले, क्योंकि उसे (वस्तु को) परिणमन के लिये तेरे विकल्प की अपेक्षा नहीं। वह (परिणमन) तो स्वयं में स्वयं से अपने नियतक्रम में हो रहा है, तू उसे जान, समझ और ये परासक्तता व परकर्तृत्व की अनर्गल प्रवृत्तियों को छोड़ निज ध्रुवधाम की धुन रमा। **– आत्मधर्म : मई 1981, पृष्ठ 25**

(58) जिसकी लौकिक नीति का ठिकाना नहीं, उसे लोकोत्तर आत्मस्वभाव समझ में आ जाये – ऐसा कभी भी नहीं बनता। सत्य का एक अंश भी खंडित कर दिया जाये तो वह सत्य नहीं रह सकता। **– आत्मधर्म : जून 1981, पृष्ठ 24**

(59) भाई ! यह तो दिगम्बर सन्तों की वाणी है। ऐसी वाणी और कहीं पर नहीं है। दिगम्बर धर्म कोई पक्ष या मतवाद नहीं है, परन्तु वस्तु का जो यथार्थ स्वरूप है, वह दिगम्बर सन्तों ने प्रसिद्ध किया है। **– आत्मधर्म : जुलाई 1981, पृष्ठ 11**

(60) भाई ! अपने आत्मा में सब भरा पड़ा है, बाहर कहीं कुछ लेने जाना पड़े – ऐसा है ही नहीं। बाहर के संयोगों की क्या कीमत ? पानी की बाढ की तरह आते हैं और जाते हैं, किसी के भी रोके नहीं रुकते तथा किसी को बाधाकारक भी नहीं होते।

धर्म तो जब कभी भी होगा, निजस्वभाव के अवलम्बन से ही होगा; चाहे वह कोई भी काल हो, चाहे कोई भी क्षेत्र हो। देखो ! आत्मा के अवलम्बन की प्रमुखता है – क्षेत्र, काल आदि की नहीं। नरक में रहो, चाहे भगवान के समवशरण में; महाविदेह क्षेत्र में रहो, चाहे भरतक्षेत्र में; धर्म तो परमपारिणामिक भाव के अवलम्बन से ही होता है। **– आत्मधर्म : अगस्त 1981, पृष्ठ 20**

(61) जब हम स्वादिष्ट आम चूसते हैं, तब उसमें ऐसे तल्लीन हो जाते हैं कि मानो स्वर्ग का सुख उतर आया हो; किन्तु प्रभो ! तेरा रस तुझ ही में है, तेरा रस आम में से या जीभ में से नहीं आता, तू तो मात्र अपने राग का वेदन करता है; जड़ का वेदन कोई नहीं कर सकता। आत्मा रस का वेदन तो कभी नहीं करता, किन्तु रस का स्वरूप ज्ञान से ज्ञात होता है, उस ज्ञान को ही जानता है। जो यह मानता है कि मैंने जीभ से रस चखा है, वह पराधीन दृष्टिवाला मूढ मिथ्यात्वी है। यदि परमार्थदृष्टि से देखा जाय तो आत्मा द्रव्येन्द्रिय के आलम्बन द्वारा रस नहीं चखता, अत: आत्मा अरस है। **– आत्मधर्म : सितम्बर 1981, पृष्ठ 12**

(62) यथार्थ को समझे बिना अनन्तभवों में भ्रमण किया और यदि अभी भी सत्य को न समझा तो चौरासी लाख योनियों के भयंकर भवभ्रमण के लिए तैयार हो जा। अरे ! जिस भाव से अभी तक अनन्तभव किए, उस भाव से भव का नाश नहीं होगा, किन्तु उससे विरुद्ध भावों से भव का नाश होगा। **– आत्मधर्म : अक्टूबर 1981, कवर पृष्ठ 2**

(63) एक क्षणभर का सम्यग्दर्शन अनन्त जन्म-मरण का नाश करने वाला है। एक मात्र सम्यग्दर्शन के अतिरिक्त जीव अनंतकाल में सब कुछ कर चुका है, परन्तु सम्यग्दर्शन कभी एक क्षणमात्र भी प्रगट नहीं किया। यदि कोई जीव एक क्षण के लिए भी सम्यग्दर्शन प्रगट करे तो उसकी मुक्ति हुए बिना न रहे। सम्यग्दर्शन ही मानव जीवन का सबसे अधिक महान और प्रथम कर्तव्य है।

– आत्मधर्म : नवम्बर 1981, पृष्ठ 16

(64) भाई ! व्यवहार स्वयं मिथ्यात्व नहीं है, व्यवहार तो ज्ञानी को भी होता है; यहाँ तो चौदहवें गुणस्थान पर्यंत व्यवहार कहा है, वह व्यवहार मिथ्यात्व नहीं है; परन्तु व्यवहार के भेद के अवलम्बन में अटककर उससे लाभ माने तो अवश्य मिथ्यात्व है।

– आत्मधर्म : दिसम्बर 1981, पृष्ठ 25

(65) भाई ! भगवान आत्मा है, इसकी सत्ता एक बार तो स्वीकार कर। अनादिकाल से पैसे आदि के लोभ में परपदार्थों की सत्ता को तो अनन्तबार स्वीकार किया, परन्तु सिद्धि नहीं हुई। अगर एक बार भी भगवान आत्मा की सत्ता को स्वीकार कर ले तो सिद्धि हुए बिना न रहेगी अर्थात् अवश्य होगी।

– आत्मधर्म : जनवरी 1982, पृष्ठ 22

सम्पादकीय

तत्त्वार्थमणिप्रदीप

(आचार्य उमास्वामी कृत तत्त्वार्थसूत्र की टीका)

(गतांक से आगे)

२. जिस जल का मैल नीचे बैठा हो, उसे यदि दूसरे बर्तन में रख दिया जाये तो उसमें जिसप्रकार अत्यन्त निर्मलता होती है; उसीप्रकार आत्मा में कर्मों की अत्यन्त निवृत्ति से जो आत्यन्तिक विशुद्धि होती है, वह **क्षय** है।

कर्मक्षय के लिए जो भाव होते हैं, वे क्षायिक भाव हैं।

३. जिसप्रकार कोदों को धोने से कुछ कोदों की मदशक्ति क्षीण हो जाती है और कुछ की अक्षीण रहती है; उसीप्रकार परिणामों की निर्मलता से कर्मों के एकदेश का **क्षय** और एकदेश का **उपशम** होना **मिश्र** भाव है।

इस क्षयोपशम के लिए जो भाव होते हैं, उन्हें क्षायोपशमिक भाव कहते हैं।

४. द्रव्य, क्षेत्र, काल, और भाव के निमित्त से कर्मों का फल देना **उदय** है।

उदयनिमित्तक भावों को औदयिक भाव कहते हैं।

५. जो भाव कर्मों के उपशमादिक की अपेक्षा न रखकर द्रव्य के निजस्वरूप मात्र से होते हैं, उन्हें **पारिणामिक** भाव कहते हैं।[१]''

इसप्रकार हम देखते हैं कि आरंभ के चार भाव कर्मोपाधि सापेक्ष हैं और अन्तिम पाँचवाँ पारिणामिक भाव पूर्णत: कर्मोपाधि निरपेक्ष है।

औपशमिक भाव, क्षायिक भाव, क्षायोपशमिक भाव और औदयिक भाव – ये चार भाव पर्यायरूप भाव हैं और पारिणामिक भाव द्रव्यरूप भाव हैं।

यद्यपि **क्षयोपशम** पद क्षय+उपशम=क्षयोपशम – इसप्रकार बना है। अत: इसमें क्षय और उपशम ही दिखाई देते हैं; तथापि वस्तुस्थिति यह है कि क्षयोपशम भाव में न तो असली क्षय है और न असली उपशम तथा इसमें उदय भी शामिल है ही।

मूलत: क्षायोपशमिक भाव की परिभाषा इसप्रकार है –

''वर्तमानकालीन सर्वघाति स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय (उदय के अभावरूप क्षय) और भविष्यकालीन उन्हीं स्पर्धकों का सदवस्थारूप उपशम और वर्तमानकालीन

१. तत्त्वार्थवार्तिक के दूसरे अध्याय के प्रथम सूत्र के वार्तिक/भाष्य के संबंधित अंश का भावानुवाद

देशघाति स्पर्धकों का उदय होने पर आत्मा में जो भाव होता है; उसे क्षायोपशमिक भाव कहते हैं।[१]''

इसप्रकार क्षायोपशमिक भाव में सर्वघाति स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय, भविष्यकालीन उन्हीं स्पर्धकों का सदवस्थारूप उपशम और देशघाति स्पर्धकों के उदय का मिश्रण है।

कुछ लोग समझते हैं कि यह क्षायोपशमिक भाव; औपशमिक भाव से अच्छा होगा; क्योंकि इसमें उपशम के साथ क्षय भी शामिल है; पर ऐसा नहीं है।

ध्यान से देखो कि क्षायोपशमिक भाव में सर्वघाति स्पर्धकों का पूर्णत: क्षय नहीं है, मात्र उनका वर्तमान में उदय के अभावरूप क्षय है; क्योंकि वे स्पर्धक अभी सत्ता में विद्यमान हैं। इसीप्रकार उनका पूर्णत: उपशम भी नहीं हुआ है, अपितु उन सर्वघाति स्पर्धकों के आगामी निषेकों का सदवस्थारूप उपशम है, उसी स्थिति में ठहर जाने रूप उपशम हुआ है और देशघाति स्पर्धकों का तो उदय है ही। इसप्रकार **यह क्षायोपशमिक भाव; क्षय, उपशम और उदय – इन तीन का मिश्रण है।**

यद्यपि **क्षयोपशम** पद में **क्षय** पद विद्यमान है; तथापि क्षायोपशमिक भाव में सर्वघाति स्पर्धकों का क्षय (पूर्णत: अभाव) नहीं हुआ है, **वर्तमान में उदय के अभावरूप क्षय हुआ है; अभी उनकी सत्ता है, परन्तु वर्तमान में सर्वघातिरूप से उदय नहीं है – देशघातिरूप होकर उदय में आ रहे हैं।**

सभी लोग यह बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि जिन कर्मों का क्षय हो जाता है, उनका अस्तित्व ही नहीं रहता; पर **क्षयोपशम भाव में उदयाभावी क्षय होने पर भी उक्त कर्म का सत्ता में अस्तित्व बना रहता है, मात्र तत्समय में सर्वघाति स्पर्धकों का उदय के अभावरूप क्षय होता है। यह नाम मात्र का क्षय है; वस्तुत: यह क्षय है ही नहीं।**

इसीप्रकार उपशम भी आगामी काल में उदय में आनेवाले सर्वघाति स्पर्धकों का होता है।

वह भी असली उपशम नहीं, सदवस्थारूप उपशम है; पर देशघाति स्पर्धकों का उदय वास्तविक है।

इसप्रकार तत्संबंधी कर्मों के सर्वघाति स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय, उन्हीं के आगामी स्पर्धकों का सदवस्थारूप उपशम और देशघाति स्पर्धकों का उदय होने पर जो भाव होते हैं; उन्हें क्षायोपशमिक भाव कहते हैं।

१. सर्वार्थसिद्धि : अध्याय २, सूत्र ५

जब इस क्षायोपशमिक भाव को सम्यग्दर्शन पर घटित करते हैं तो क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन का स्वरूप इसप्रकार होता है –

मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व (मिश्र) तथा अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया और लोभ इन छह सर्वघाति प्रकृतियों के सर्वघाति स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय, इन्हीं छह प्रकृतियों के आगामी निषेकों का सदवस्था रूप उपशम और सम्यक्त्व प्रकृति नामक देशघाति प्रकृति का उदय रहते श्रद्धागुण की जो निर्मल अवस्था होती है; उसे क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन कहते हैं।

इसीप्रकार अठारह क्षायोपशमिक भावों पर घटित करना होगा।

सभी क्षायोपशमिक भावों को घटित करने के लिए प्रत्येक घातिकर्म के सर्वघाति स्पर्धक व देशघाति स्पर्धकों को जानना आवश्यक है।

सर्वार्थसिद्धि नामक टीका ग्रन्थ का अनुवाद व संपादन करते हुए इस सूत्र की टीका के अनुवाद में विशेषार्थ लिखते हुए पण्डित फूलचंदजी सिद्धान्त शास्त्री लिखते हैं–

''पाँच भावों में प्रारम्भ के चार भाव निमित्त की प्रधानता से कहे गये हैं और अन्तिम भाव योग्यता (उपादान) की प्रधानता से।

जग में जितने कार्य होते हैं, उनका विभागीकरण इसी हिसाब से किया जाता है। कहीं निमित्त को प्रमुखता दी जाती है और कहीं योग्यता (उपादान) को; पर इससे **अन्य वस्तु का कर्तृत्व अन्य में मानना उचित नहीं।**

ऐसे विभागीकरण को दिखलाने का इतना ही प्रयोजन है कि जहाँ जिस कार्य का जो सुनिश्चित निमित्त हो, उसका परिज्ञान हो जावे।

यों तो कार्य अपनी योग्यता (उपादान) से होता है; किन्तु जिसका जिसके होने के साथ सुनिश्चित अन्वय-व्यतिरेक पाया जाता है, वह उसका सुनिश्चित निमित्त कहा जाता है।

इस हिसाब से विचार करने पर औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक और औदयिक ये चार नैमित्तिक भाव कहलाते हैं।[१]''

इन पाँचों भावों के संदर्भ में विशेष विचार आगामी पाँच सूत्रों में यथास्थान होगा ही; अत: यहाँ विशेष विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है।।१-२।।

औपशमिक भाव

दो प्रकार के औपशमिक भाव इसप्रकार हैं –

१. सर्वार्थसिद्धि, पृष्ठ १०८

सम्यक्त्वचारित्रे ।।३ ।।

औपशमिक सम्यक्त्व और औपशमिक चारित्र – ये दो भेद औपशमिक भाव के हैं।

उपशम मात्र मोहनीय कर्म का होता है; शेष सात कर्मों का उपशम नहीं होता; इसलिए औपशमिक भाव भी मात्र दो प्रकार का ही होता है।

दर्शनमोहनीय में मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्त्वप्रकृति तथा चारित्र मोहनीय की अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया व लोभ – इन सात प्रकृतियों के उपशम से औपशमिक सम्यक्त्व और चारित्र मोहनीय कर्म की २१ प्रकृतियों के उपशम से औपशमिक चारित्र होता है।

इसप्रकार औपशमिक सम्यक्त्व और औपशमिक चारित्र के भेद से औपशमिक भाव दो प्रकार का होता है।

अनादि मिथ्यादृष्टि और कभी-कभी सादि मिथ्यादृष्टि के भी मिथ्यात्व और अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया तथा लोभ – इन पाँच प्रकृतियों के उपशम से भी औपशमिक सम्यक्त्व होता है; क्योंकि जिनके यह सम्यग्दर्शन होता है, उनके सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्त्व नामक प्रकृति की सत्ता ही नहीं होती।

यह तो सर्वविदित ही है कि करणलब्धि के उपरान्त मिथ्यात्व प्रकृति के टुकड़े होने पर ही इन प्रकृतियों का जन्म होता है।

सम्यग्दर्शन पूर्वक ही सम्यक्चारित्र घटित होता है; इसलिए सूत्र में सम्यक्त्व पद पहले रखा गया है और चारित्र पद बाद में रखा गया है।

ये दोनों प्रकार के औपशमिक भाव ज्ञानी धर्मात्मा के ही होते हैं और इनका काल भी मात्र अन्तर्मुहूर्त ही है; इसकारण **औपशमिक भाव वाले जीवों की संख्या सबसे कम होती है। यही कारण है कि उक्त पाँच भावों में औपशमिक भाव का उल्लेख आरंभ में किया गया है।।३।।**

क्षायिक भाव

नौ प्रकार के क्षायिक भाव इसप्रकार हैं –

ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ।।४।।

क्षायिक ज्ञान, क्षायिक दर्शन, क्षायिक दान, क्षायिक लाभ, क्षायिक भोग, क्षायिक उपभोग और क्षायिक वीर्य – ये सात तथा च शब्द से ग्रहण करने योग्य क्षायिक सम्यक्त्व और क्षायिक चारित्र – ये दो – इसप्रकार कुल मिलाकर नौ भेद क्षायिकभाव के हैं।

इसे हम इसप्रकार भी कह सकते हैं कि तीसरे सूत्र में कहे गये सम्यक्त्व और चारित्र तथा ज्ञान, दर्शन, लाभ, भोग, उपभोग एवं वीर्य ये नौ भाव क्षायिक भाव हैं। ये क्षायिक भाव पर्यायदृष्टि से सबसे महान हैं, प्राप्त करने योग्य हैं; प्राप्त करने की अपेक्षा से पूर्णत: उपादेय हैं।

इन क्षायिक भावों का स्वरूप तत्त्वार्थवार्तिक में इसी सूत्र की व्याख्या में आचार्य अकलंकदेव इसप्रकार स्पष्ट करते हैं –

''समग्र ज्ञानावरण के क्षय से **केवलज्ञान** और समग्र दर्शनावरण के क्षय से **केवलदर्शन क्षायिक होते हैं।**

समस्त दानान्तराय कर्म के अत्यन्त क्षय से अनन्त प्राणियों को अभय और अहिंसा का उपदेशरूप **अनन्त दान क्षायिक दान है।**

सम्पूर्ण लाभान्तराय का अत्यन्त क्षय होने पर कवलाहार न करनेवाले केवली को शरीर की स्थिति में कारणभूत परम शुभ दिव्य अनन्त पुद्गलों का प्रतिसमय शरीर में संबंधित होना **क्षायिक लाभ** है। अत: 'कवलाहार के बिना कुछ कम पूर्वकोटि वर्ष तक औदारिक शरीर की स्थिति कैसे रह सकती है ?' यह शंका निराधार हो जाती है।

संपूर्ण भोगान्तराय के नाश से उत्पन्न होनेवाले सातिशय भोग क्षायिक भोग है। इसी से पुष्पवृष्टि, गन्धोदकवृष्टि, पदकमलरचना, सुगंधित शीत वायु आदि अतिशय होते हैं।

समस्त उपभोगान्तराय के नाश से उत्पन्न होनेवाला सातिशय उपभोग क्षायिक उपभोग है। इसी से सिंहासन, छत्रत्रय, चमर, अशोक वृक्ष, भामण्डल, दिव्यध्वनि, देवदुन्दुभि आदि होते हैं। समस्त वीर्यान्तराय के अत्यन्त क्षय से प्रकट होनेवाला अनन्त क्षायिक वीर्य है।

दर्शनमोह के क्षय से क्षायिक सम्यग्दर्शन और चारित्रमोहनीय के क्षय से क्षायिक चारित्र होता है।

प्रश्न – दानान्तराय आदि के क्षय से प्रकट होनेवाली दानादि लब्धियों के अभयदान आदि कार्य सिद्धों में भी होने चाहिए।

उत्तर – नहीं; क्योंकि दानादि लब्धियों के कार्य के लिए शरीर नामकर्म और तीर्थंकर प्रकृति के उदय की भी अपेक्षा है। सिद्धों में ये लब्धियाँ अव्याबाध अनन्त सुखरूप से रहती हैं। जैसे कि केवलज्ञानरूप में अनन्तवीर्य।''

इसीप्रकार का भाव आचार्य पूज्यपाद कृत सर्वार्थसिद्धि शास्त्र में भी व्यक्त

किया गया है।

ये सभी क्षायिक भाव एक बार उत्पन्न होने के बाद अनन्तकाल तक रहते हैं; इनका अभाव कभी भी नहीं होता।

यद्यपि ये भाव पर्यायरूप हैं; अत: प्रतिसमय बदलना इनका सहज स्वभाव है; इसलिए इनकी स्थिति भी एक समय की ही है; तथापि ये सन्तति की दृष्टि से अनन्तकाल तक एक से ही रहते हैं।

औपशमिकभाववालों से अधिक संख्या क्षायिक भाववालों की होती है; इसकारण क्षायिकभाव का उल्लेख औपशमिक भाव के तत्काल बाद किया गया है। क्षायिक भाववालों में सभी अरहंत व सिद्ध तथा क्षपकश्रेणीवाले तथा क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव आते हैं।

ये औपशमिक और क्षायिक भाव; सम्यग्दृष्टि ज्ञानी जीवों के ही होते हैं; ये भाव धर्मभाव हैं; इसलिए भी इन्हें सबसे पहले रखा गया है।।४।।

क्षायोपशमिक भाव

अठारह प्रकार के क्षायोपशमिक भाव इसप्रकार हैं –

ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपञ्चभेदा: सम्यक्त्वचारित्रसंयमा-संयमाश्च ।।५।।

चार ज्ञान, तीन अज्ञान, तीन दर्शन, पाँच लब्धियाँ, सम्यक्त्व, चारित्र और संयमासंयम – ये अठारह क्षायोपशमिक भाव हैं।

मति, श्रुत, अवधि और मन:पर्यय – ये चार ज्ञान हैं और कुमति, कुश्रुत, कुअवधि – ये तीन अज्ञान हैं; तथा चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन – ये तीन दर्शन हैं; दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य – ये पाँच लब्धियाँ हैं।

४ ज्ञान, ३ अज्ञान, ३ दर्शन, ५ लब्धियाँ – इसप्रकार ४+३+३+५=१५ और सम्यक्त्व, चारित्र व संयमासंयम – इसप्रकार १८ भेद क्षायोपशमिक भाव के हैं।

चार प्रकार के क्षायोपशमिक ज्ञान, तीन प्रकार के अज्ञान व तीन प्रकार के दर्शन की परिभाषा प्रथम अध्याय में स्पष्ट की जा चुकी है।

पाँच लब्धियों की चर्चा क्षायिक भाव के प्रकरण में हुई है। इतना अन्तर समझना चाहिए कि क्षायिक भाव में अन्तराय के क्षय से होनेवाली लब्धियाँ हैं और यहाँ क्षायोपशमिक भाव के प्रकरण में अन्तराय कर्म के क्षयोपशम से होनेवाली लब्धियों की बात है।

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व का स्वरूप इसी अध्याय के पहले-दूसरे सूत्र की व्याख्या में आ गया है।

अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरण और प्रत्याख्यानावरण – इन बारह कषाय कर्मों के उदयाभावी क्षय और इन्हीं के सदवस्थारूप उपशम होने से तथा चार संज्वलनों में से किसी एक प्रकृति के देशघाति स्पर्धकों का उदय होने पर नौ नोकषायों का यथासंभव उदय होने पर जो संसार से पूरी निवृत्तिरूप परिणाम होता है, वह क्षायोपशमिक चारित्र है। यह चारित्र छठवें-सातवें गुणस्थानवर्ती मुनिराजों के होता है।

अनन्तानुबंधी और अप्रत्याख्यानावरण – इन आठ कषायों के उदयाभावी क्षय और इन्हीं के सदवस्थारूप उपशम होने से तथा प्रत्याख्यानावरण व संज्वलन कषाय के देशघाति स्पर्धकों के उदय होने पर नौ नोकषायों के यथासंभव उदय होने पर जो विरताविरतरूप परिणाम होता है, वह संयमासंयम कहलाता है।

यह संयमासंयम पंचम गुणस्थानवर्ती श्रावकों के होता है।[१]

ये अठारह प्रकार के भाव ज्ञानी-अज्ञानी – सभी छद्मस्थ जीवों के होते हैं। इसका आशय यह नहीं है कि सभी भाव सभी छद्मस्थों के होते हैं। तात्पर्य यह है कि मति, श्रुत, अवधि और मन:पर्ययज्ञान ज्ञानियों के होते हैं और कुमति, कुश्रुत और कुअवधि अज्ञानियों के होते हैं। इसीप्रकार अन्य भावों के संदर्भ में भी समझ लेना चाहिए।

ज्ञानी-अज्ञानी सभी छद्मस्थों के होने से क्षयोपशम भाववालों की संख्या क्षायिक भाववालों से अधिक है। इसलिए इसे सूत्र में तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है।

इनसे भी अधिक संख्या औदयिक भाववालों की है; क्योंकि वे चौदह गुणस्थान वाले सभी संसारी जीवों के पाये जाते हैं। इसलिए औदयिक भाववालों को चौथा स्थान प्राप्त हुआ है।

पारिणामिक भाव सभी जीवों के होने के कारण सर्वाधिक संख्या वाला है; अत: उसे पंचम स्थान प्राप्त हुआ है, अन्तिम स्थान प्राप्त हुआ है।

इसप्रकार पहले सूत्र के क्रम में पाँचों भावों को जो स्थान प्राप्त हुआ है, उसमें संख्या की न्यूनाधिकता एक मुख्य कारण है।।५।।

औदयिक भाव

इक्कीस औदयिक भावों के नाम क्रमश: इसप्रकार हैं –

१. सर्वार्थसिद्धि, अध्याय २, सूत्र ५ की टीका, पृष्ठ ११३

गतिकषायलिंगमिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिद्धलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैक-षड्भेदा: ।।६।।

चार गति, चार कषाय, तीन लिंग, मिथ्यादर्शन, अज्ञान, असंयम, असिद्धत्व और छह लेश्यायें – ये इक्कीस भाव औदयिक भाव हैं।

नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति व देवगति – ये चार गतियाँ; क्रोध, मान, माया, लोभ – ये चार कषायें; स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, नपुंसक लिंग – ये तीन लिंग; मिथ्यादर्शन, अज्ञान, असंयम, असिद्धत्व और कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म व शुक्ल – ये छह लेश्यायें – इसप्रकार इक्कीस प्रकार के ये औदयिक भाव हैं।

इन २१ औदयिक भावों का सामान्य स्वरूप तत्त्वार्थवार्तिक में इसप्रकार स्पष्ट किया गया है –

''जिस कर्म के उदय से आत्मा नारक आदि भावों को प्राप्त हो, वह गति है।

कषाय नामक चारित्रमोह के उदय से होनेवाली क्रोधादिरूप कलुषता कषाय कहलाती है। यह आत्मा के स्वाभाविक रूप को कष् देती है अर्थात् उसकी हिंसा करती है।

द्रव्य और भाव के भेद से लिंग दो प्रकार का है। चूँकि **आत्म भावों का प्रकरण है, अत: नामकर्म के उदय से होनेवाले द्रव्यलिंग की यहाँ विवक्षा नहीं है।** स्त्रीवेद के उदय से होनेवाला पुरुषाभिलाषारूप भाव स्त्रीवेद है, पुरुषवेद के उदय से होनेवाला स्त्री-अभिलाषारूप भाव पुरुषवेद और नपुंसकवेद के उदय से होनेवाला उभयाभिलाषा रूप भाव नपुंसकवेद है।

दर्शनमोह के उदय से तत्त्वार्थ में अरुचि या अश्रद्धानरूप भाव **मिथ्यात्व** कहलाता है।

जिसप्रकार प्रकाशमान सूर्य का तेज सघन मेघों द्वारा तिरोहित हो जाता है; उसीतरह ज्ञानावरण के उदय से ज्ञानस्वरूप आत्मा के ज्ञान गुण की अनभिव्यक्तिरूप भाव **अज्ञान** है।

चारित्रमोह के उदय से होनेवाली हिंसादि और इन्द्रिय विषयों में प्रवृत्तिरूप भाव **असंयम** है।

अनादि से कर्मबद्ध आत्मा के सामान्यत: सभी कर्मों के उदय से **असिद्ध पर्याय** होती है।

कषाय के उदय से अनुरंजित योगप्रवृत्तिरूप भाव **भावलेश्या** है। **द्रव्यलेश्या पुद्गलविपाकी शरीर नामकर्म के उदय से होती है; अत: आत्म भावों के प्रकरण में उसका ग्रहण नहीं किया है।**

यद्यपि योगप्रवृत्ति आत्मप्रदेशों की परिस्पन्दरूप होने से क्षायोपशमिक वीर्यलब्धि में अन्तर्भूत हो जाती है और कषाय औदयिकी होती है फिर भी कषायोदय के तीव्र-मन्द आदि तारतम्य से अनुरंजित प्रवृत्तिरूप लेश्या पृथक् ही है।

यद्यपि उपशान्तकषाय, क्षीणकषाय और सयोगकेवली गुणस्थानों में कषाय का उदय नहीं है, फिर भी वहाँ भूतपूर्व प्रज्ञापन नय की अपेक्षा शुक्ल लेश्या उपचार से कही है।

मिथ्यादर्शन में दर्शनावरण के उदय से होनेवाले अदर्शन का अन्तर्भाव हो जाता है। यद्यपि मिथ्यादर्शन तत्त्वार्थ के श्रद्धानरूप भाव है, फिर भी अदर्शन सामान्य में दर्शनाभावरूप से दोनों प्रकार के दर्शनों का अभाव ले लिया जाता है।[१]''

ये २१ औदयिक भाव त्यागने योग्य हैं।।६।।

पारिणामिक भाव

पारिणामिक भावों के भेद क्रमश: इसप्रकार हैं –

जीवभव्याभव्यत्वानि च।।७।।

जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व – ये तीन पारिणामिक भाव हैं।

इन भावों का स्वरूप तत्त्वार्थवार्तिक में इसप्रकार स्पष्ट किया गया है–

''कर्म के उदय, उपशम, क्षय और क्षयोपशम की अपेक्षा न रखनेवाले मात्र द्रव्य की स्वभावभूत अनादि पारिणामिकी शक्ति से ही आविर्भूत ये भाव पारिणामिक हैं।

जीवद्रव्य का निज परिणाम ही जीवत्व है।

सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र पर्याय जिसकी प्रकट होगी, वह भव्य है और जिसके प्रकट न होगी वह अभव्य। द्रव्य की शक्ति से ही यह भेद है। **उस भव्य को, जो अनन्तकाल में भी सिद्ध नहीं होगा, अभव्य नहीं कह सकते, क्योंकि उसमें भव्यत्वशक्ति है।**[२]''

इसप्रकार जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व – ये तीन भाव पारिणामिक भाव हैं।।७।। **(क्रमश:)**

१. तत्त्वार्थवार्तिक, हिन्दी सार, पृष्ठ ३४२-३४३ २. वही, पृष्ठ ३४३

छहढाला प्रवचन

मोक्षमहल की सीढी एवं उसकी दुर्लभता

मोक्षमहल की परथम सीढ़ी, या बिन ज्ञान चरित्रा।
सम्यक्ता न लहै, सो दर्शन, धारो भव्य पवित्रा।।
'दौल' समझ, सुन, चेत, सयाने काल वृथा मत खोवै।
यह नरभव फिर मिलन कठिन है, जो सम्यक् नहिं होवै।।१७।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

जो समझदार है, जो आत्मा को भवदु:ख से छुड़ाने तथा मोक्षसुख के अनुभव के लिये सम्यक्त्व का पिपासु है, ऐसे भव्य जीव को सम्बोधन करके सम्यग्दर्शन की प्रेरणा देते हैं कि अरे प्रभु ! यह तेरे हित का अवसर आया है; तू मूढ़ नहीं, किन्तु समझदार है, सयाना है, हित-अहित का विवेक करनेवाला है, जड़-चेतन का विवेक करनेवाला है, इसलिये तू श्रीगुरु का यह उत्तम उपदेश सुनकर अब तुरन्त सम्यग्दर्शन धारण कर। यहाँ तक आकर अब विलम्ब न कर। शरीरादि से भिन्न आत्मा का अनुभव कर, उसका अंतरंग उद्यम कर।

''समझ, सुन, चेत, सयाने!'' हे सयाने जीव! तू सुन, समझ और सावधान हो। चेतकर अविलम्ब सम्यक्त्व को धारण कर। मोह का अभाव करके सावधान हो और अपनी ज्ञानचेतना द्वारा अपने शुद्ध आत्मा को चेत... उसका अनुभव कर। सर्वज्ञ परमात्मा में जो है वह सब तेरे आत्मा में भी है – ऐसा जानकर प्रतीति करके स्वानुभव कर। मृग की भाँति बाह्य में मत ढूँढ़, अपने अन्दर है उसे अनुभव में ले।

देखो, गृहस्थ-पंडित ने भी शास्त्रधार से छहढाला की कितनी सुन्दर रचना की है।

संसार में भटकते-भटकते अनंतकाल में बड़ी कठिनाई से यह मनुष्यभव प्राप्त हुआ; उसमें ऐसा जैनधर्म और सत्समागम मिला, सम्यक्त्व का ऐसा उपदेश मिला,

तो अब कौन ऐसा मूर्ख होगा जो इस अवसर को व्यर्थ गँवा दे? भाई, काल गँवाये बिना अंतरंग उद्यम पूर्वक तू निर्मल सम्यग्दर्शन धारण कर। चार गतियों में बहुत दुःख तूने सहे, अब उन दुःखों से छूटने के लिये आत्मा की यह बात सुन। सम्यग्दर्शन की ऐसी उत्तम बात सुनकर अब तू जागृत हो और तुरन्त ही सम्यग्दर्शन कर ले। यह तेरा समझने का काल है, सम्यग्दर्शन प्रगट कर। देखो, कैसा अच्छा सम्बोधन किया है! भोगभूमि में भी भगवान ऋषभदेव के जीव को सम्यग्दर्शन का उपदेश देकर मुनिराज ने ऐसा कहा था कि – हे आर्य! तू इसी समय इस सम्यक्त्व को ग्रहण कर... तुझे सम्यक्त्व की प्राप्ति का यह काल है। 'तत् गृहाण अद्य सम्यक्त्वं तत्ला में काल एष ते'.... और सचमुच उस जीव ने तत्क्षण ही सम्यग्दर्शन प्रगट किया। उसीप्रकार यहाँ भी कहते हैं कि – हे भव्य! तू अविलम्ब – इसी समय सम्यक्त्व को धारण कर! और सुपात्र जीव अवश्य सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है।

हे जीव! जितना चैतन्यभाव है उतना ही तू है; अजीव से तेरा आत्मा भिन्न है, रागादि ममत्व से भी आत्मा का स्वभाव भिन्न है; ऐसे आत्मा की प्रतीति के बिना अनंतकाल व्यर्थ गँवा दिया; परन्तु अब यह उपदेश सुनने के बाद तू एक क्षण भी मत गँवाना तुरन्त ही अन्तर में सम्यक्त्व का उद्यम करना, प्रत्येक क्षण अति मूल्यवान है; बहुमूल्य मणि-रत्नों से भी मनुष्यभव महँगा है और फिर उसमें भी इस सम्यग्दर्शन-रत्न की प्राप्ति महा दुर्लभ है। अनंतबार मनुष्य हुआ और स्वर्ग में भी गया; परन्तु सम्यग्दर्शन प्राप्त नहीं किया – ऐसा जानकर अब तू सम्यग्दर्शन प्रगट कर। जहाँ सच्चा पुरुषार्थ है वहाँ काललब्धि भी साथ में ही है। पुरुषार्थ से काललब्धि भिन्न नहीं है; इसलिये हे भाई! इस अवसर में आत्मा को समझकर उसकी श्रद्धा कर! अन्य निष्प्रयोजन कार्यों में काल न गवाँ।

पर के कार्य तेरे नहीं हैं और न परवस्तु तेरे काम की है; आनन्दकन्द आत्मा ही तेरा है, उसी को काम में ले, श्रद्धा-ज्ञान में ले। परवस्तु या पुण्य-पाप तेरे हित के लिये काम नहीं आयेंगे अपने ज्ञानानन्दस्वभाव को श्रद्धा में ले वही तुझे मोक्ष के लिये कार्यकारी है। समयसार में आत्मा को भगवान कहकर बुलाया है। जिस प्रकार माता बच्चे का पालना झुलाते हुए गीत गाती है कि ''मेरा मुन्ना बड़ा सयाना...'' उसीप्रकार जिनवाणी माता कहती है कि हे जीव! तू भगवान है... तू सयाना-समझदार है,

इसलिये मोह छोड़कर जाग, चेत और अपने आत्मस्वभाव को देख... आत्मस्वभाव का सम्यग्दर्शन मोक्ष का दाता है। सम्यग्दर्शन होने पर मोक्ष अवश्य होगा। तेरा गुणगान करके तुझे जगाते हैं... और सम्यग्दर्शन प्राप्त कराते हैं।

आत्मा अखण्ड ज्ञान-दर्शनस्वरूप है, वह पवित्र है; पुण्य-पाप तो मलिन हैं, उसमें स्व-पर को जानने की शक्ति नहीं है और भगवान आत्मा तो स्वयं अपने को तथा पर को भी जाने ऐसा चेतकस्वभावी है। – ऐसे आत्मा के सन्मुख होकर उसकी श्रद्धा और अनुभव करने से जो सम्यग्दर्शन हुआ उसका महान प्रताप है। सम्यग्दर्शन से रहित सब बिना इकाई के शून्य के समान है, धर्म में उसका कोई मूल्य नहीं है। सम्यग्दृष्टि को अन्तर में चैतन्य के शांत-रस का वेदन है। अहा, उस शांति के अनुभव की क्या बात! श्रेणिक राजा वर्तमान में नरकगति में होने पर भी सम्यग्दर्शन के प्रताप से वहाँ के दुःख से भिन्न ऐसे चैतन्यसुख का वेदन भी उनको वर्त रहा है। पहले मिथ्यात्वदशा में महापाप से उन्होंने सातवें नरक की असंख्य वर्ष की आयु का बंध कर लिया; परन्तु बाद में वे सम्यक्त्व को प्राप्त हुए और सातवें नरक की आयु तोड़कर पहले नरक की मात्र ८४००० चौरासी हजार वर्ष की आयु कर दी। वे राजगृही के राजा गृहस्थाश्रम में अव्रती थे, तथापि भगवान महावीर के समवसरण में क्षायिक सम्यग्दर्शन प्राप्त किया; नरक आयु नहीं बदल सकी, परन्तु उसकी स्थिति तोड़कर असंख्यातवें भाग की कर दी। नरक की घोर यातनाओं के बीच भी उससे अलिप्त ऐसी सम्यग्दर्शन परिणति के सुख का वह आत्मा वेदन कर रहा है। ''बाहर नारकीकृत दुःख भोगै, अंतर सुखरस गटागटी।'' – इसप्रकार सम्यग्दर्शन सहित जीव नरक में सुखी है, और सम्यक्दर्शन के बिना तो स्वर्ग में भी वह दुःखी है। श्री परमात्मप्रकाश में कहा है कि सम्यग्दर्शन सहित तो नरकवास भी अच्छा है और सम्यग्दर्शन से रहित देवलोक में निवास भी अच्छा नहीं... अर्थात् जीव को सर्वत्र सम्यग्दर्शन ही इष्ट है, भला है, सुखकारी है, इसके बिना जीव को कहीं सुख नहीं है। सम्यग्दर्शन में अतीन्द्रिय आत्मरस का वेदन है; देवों के अमृत में भी उस आत्मरस का सुख नहीं है। मनुष्य-जीवन की सफलता सम्यग्दर्शन से ही है, स्वर्ग की अपेक्षा सम्यग्दर्शन श्रेष्ठ है, तीन लोक में सम्यग्दर्शन श्रेष्ठ है। ज्ञान और चारित्र भी सम्यग्दर्शन सहित हों तभी श्रेष्ठता को प्राप्त होते हैं। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन –

अहिंसाव्रत का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के व्यवहारचारित्राधिकार की गाथा 56 पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

कुलजोणिजीवमग्गणठाणाइसु जाणिऊण जीवाणं।
तस्सारंभ णियत्तण परिणामो होइ पढमवदं।।५६।।

(हरिगीत)

कुल योनि जीवस्थान मार्गणथान जिय के जानकर।
उन्हीं के आरंभ से बचना अहिंसाव्रत कहा।। ५६।।

कुल, योनि, जीवस्थान और मार्गणास्थान आदि को जानकर उनके आरम्भ से निवृत्तिरूप परिणाम पहला (अहिंसा) व्रत है।

(गतांक से आगे....)

अब तक निश्चयचारित्र का वर्णन किया। अब व्यवहारचारित्र का वर्णन करते हैं।

जिसको शुद्धात्मा की श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र हुआ है और उसके आश्रय से निश्चयचारित्रदशा प्रकट हुई है, उसको जब विकल्प उठता है उस समय व्यवहारचारित्र का विकल्प कैसा होता है – वह बतलाते हैं। जो व्यवहार के भाव उत्पन्न होते हैं उनकी ज्ञानी को भावना नहीं है, परमार्थ से तो वे ज्ञानी के ज्ञान के ज्ञेय हैं, वह राग का विकल्प वास्तव में किंचित् भी धर्म का कारण नहीं है, वह तो बंध का ही कारण है; किन्तु मुनिराज के छठे गुणस्थान में स्वभाव का आश्रय पूर्ण नहीं है, हीन आश्रय है अर्थात् वहाँ राग का विकल्प उठ जाता है उसी का अब व्यवहारचारित्र अधिकार में वर्णन करते हैं। व्यवहारचारित्र बन्ध का कारण है और निश्चयचारित्र मोक्ष का कारण है – यह बात बाद में कहेंगे।

आगे परमार्थ-प्रतिक्रमण अधिकार के प्रारम्भ में ही टीका में कहेंगे कि 'अब,

सकल व्यवहारिक चारित्र से और उसके फल की प्राप्ति से प्रतिपक्ष ऐसे शुद्ध निश्चयनयात्मक परम चारित्र का प्रतिपादन करनेवाला परमार्थ-प्रतिक्रमण अधिकार कहा जाता है।

व्यवहारचारित्र बन्ध का कारण है और निश्चयचारित्र उससे प्रतिपक्ष है अर्थात् वह मोक्ष का कारण है। व्यवहारचारित्र रागवाला है और निश्चयचारित्र वीतरागी है; परन्तु छठी भूमिका में व्यवहारचारित्र होता है। कोई कहे कि मुनि के छठे गुणस्थान में विकल्प होता ही नहीं तो वह मुनि की दशा को जानता ही नहीं।

मुनि को सहज स्वभाव के अवलम्बन की ही भावना है; किन्तु स्वभाव के आश्रय की कचास में अहिंसादि व्रतों का विकल्प उठता है, उसे यहाँ व्यवहारचारित्र के रूप में कहा गया है।

कुलभेद, योनिभेद, जीवस्थान के भेद और मार्गणास्थान के भेद पहले ही (४२वीं गाथा की टीका में ही) प्रतिपादित कर दिये गये हैं, यहाँ पुनरुक्ति दोष के भय से नहीं कहे।

शुद्धभाव अधिकार में मात्र अभेद परम स्वभाव का ही आश्रय बतलाया था। यहाँ पर्याय का ज्ञान कराते हैं। परजीव की रक्षा या हिंसा तो आत्मा कर ही नहीं सकता; किन्तु मुनि को अहिंसा का शुभ विकल्प उठता है उसको यहाँ व्यवहार से अहिंसाव्रत कहा है।

व्यवहार के अनेक प्रकार आते हैं वहाँ अज्ञानी उनके आश्रय से लाभ मान लेता है; परन्तु उस व्यवहार का रूप तो संसार है। व्यवहार का ज्ञान कराया है; किन्तु उसका आश्रय करने के लिए नहीं कहा है; क्योंकि उसके आश्रय का फल तो संसार ही है।

समयसार ग्रन्थ की टीका लिखते हुए पं. जयचन्दजी कहते हैं :–

''प्राणियों को भेदरूप व्यवहार का पक्ष तो अनादिकाल से ही है और उसका उपदेश भी बहुधा सर्व प्राणी परस्पर करते हैं। तथा जिनवाणी में व्यवहार का उपदेश शुद्धनय का हस्तावलम्ब जानकर बहुत किया है; परन्तु उसका फल संसार ही है। शुद्धनय का पक्ष तो कभी आया नहीं और उसका उपदेश भी विरल है – कहीं कहीं है। अतः उपकारी श्रीगुरु ने शुद्धनय के ग्रहण का फल मोक्ष जानकर उसका उपदेश

प्रधानता से (मुख्यतया से) दिया है, कि ''शुद्धनय भूतार्थ है, सत्यार्थ है; उसका आश्रय करने से सम्यग्दृष्टि हो सकता है; उसके जाने बिना जब तक जीव व्यवहार में मग्न है तब तक आत्मा के ज्ञानश्रद्धानरूप निश्चय सम्यक्त्व नहीं हो सकता।''

यहाँ व्यवहारचारित्र का विकल्प मुनि के कैसा होता है वह बताते हैं।

मुनि के (मुनित्वोचित) शुद्धपरिणति के साथ वर्तता हुआ (हठरहित) देहचेष्टादिक सम्बन्धी शुभोपयोग व्यवहार-प्रयत्न है। (शुद्धपरिणति न हो वहाँ शुभोपयोग हठ-सहित होता है; वह शुभोपयोग तो व्यवहार-प्रयत्न भी नहीं कहलाता।)

त्रिकालीस्वभाव का अवलम्बन निश्चय-प्रयत्न है, वहाँ बीच में आने वाला शुभ विकल्प व्यवहार-प्रयत्न है। शुद्धस्वभाव के आश्रय बिना अकेला शुभोपयोग तो हठरूप है, वह व्यवहार चारित्र नहीं है।

परजीव मरे अथवा न मरे वह तो उसकी पर्याय है, वह यह आत्मा नहीं करता; किन्तु अहिंसा के शुभभाव के प्रयत्नरूप परिणाम के बिना सावद्यपरिहार नहीं होता। पर में प्रयत्न की बात नहीं है, यह तो अपने में शुभपरिणाम के प्रयत्न की बात है। ऐसे शुभ बिना अशुभभावरूप सावद्य का परिहार नहीं होता। इसलिए प्रयत्नपरायण को हिंसापरिणति के अभाव होने से अहिंसाव्रत होता है। निश्चय से तो शुभभाव भी स्वरूप की हिंसा है, परन्तु व्यवहार में पाप के अभाव को अहिंसा कहते हैं। मुनि को निश्चय से तो स्वभाव के आश्रय का ही प्रयत्न है, परन्तु उसमें लीन न रह सकने की दशा में ऐसी व्यवहार-अहिंसा का विकल्प होता है। **(क्रमशः)**

तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में -

जयपुर व उज्जैन का संयुक्त शिविर

कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 29 सितम्बर से 5 अक्टूबर तक तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में **निजात्मकेलि शिखर शिविर एवं बाल संस्कार ज्ञान-वैराग्य महोत्सव** का आयोजन होने जा रहा है।

इस शिविर में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचंदजी जैन सिवनी, ब्र. सुमतप्रकाशजी, पण्डित विमलदादा झांझरी आदि अनेक विद्वानों का लाभ प्राप्त होगा।

सभी साधर्मीजन इष्टमित्रों सहित शिविर में धर्मलाभ लेने हेतु आमंत्रित हैं।

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : सम्यग्दृष्टि को शुद्धात्मा का विचार उपयोग में चल रहा हो, उसे ही शुद्धोपयोग कहते हैं न ?

उत्तर : नहीं, शुद्धात्मा का विचार शुद्धोपयोग नहीं है, यह तो रागमिश्रित विचार है। शुद्धात्मा में एकाग्र होकर निर्विकल्प उपयोगरूप परिणाम हो, वह शुद्धोपयोग है। जिसमें ज्ञेय-ज्ञान-ज्ञाता का भेद छूटकर मात्र अभेदरूप चैतन्यपिण्ड ही अनुभव में आवे, वह शुद्धोपयोग है।

प्रश्न : ज्ञानी को विभाव परदेश लगता है, तो उसका खेद होता है कि ज्ञान होता है ?

उत्तर : खेद भी होता है और ज्ञान भी होता है।

प्रश्न : क्या शुद्धि और अशुद्धि एक पर्याय में साथ ही साथ है ?

उत्तर : हाँ ! साधक को शुद्धि और अशुद्धि एक पर्याय में साथ होने पर भी अशुद्धता का जो ज्ञान होता है, वह अपना है, अशुद्धता अपनी नहीं।

प्रश्न : सम्यग्दृष्टि को गृहस्थाश्रम में रहकर राजपाट करते हुए भी समभाव कैसे रहता होगा ?

उत्तर : त्रिकाली जीवतत्त्व की दृष्टि होने से ज्ञानी को पर्यायदृष्टि नहीं है अर्थात् वह पर्याय जितना ही जीव को नहीं मानता, इसलिए उसे पर्यायबुद्धि का राग-द्वेष नहीं होता। स्वभावदृष्टि होने के कारण वह सिद्धपर्याय या निगोद पर्याय में समभाव ही रखता है। कदाचित् अल्प राग-द्वेष होने पर भी स्वभाव की एकता नहीं छूटने से वास्तव में उसे राग-द्वेष होता ही नहीं, उसे तो स्वभाव की एकता ही वर्तती है। भाई! स्वभावबुद्धि का हकार और पर्यायबुद्धि का नकार-यही स्वभाव है। आत्मा वर्तमानभाव जितना नहीं, अपितु त्रिकाल अखण्ड ज्ञानमूर्ति है - ऐसी श्रद्धा ही द्रव्यबुद्धि का स्वीकार है और पर्यायबुद्धि का अस्वीकार है। राजपाट में रहने पर भी ज्ञानी के स्वभावदृष्टि की अधिकता के कारण समभाव ही वर्तता है।

समाचार दर्शन -

37वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा दिनांक 27 जुलाई से 05 अगस्त 2014 तक 37वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सम्पन्न हुआ।

शिक्षण शिविर का उद्घाटन श्री अशोककुमारजी जैन सुभाष ट्रासपोर्ट, भोपाल के करकमलों से हुआ। सभा की अध्यक्षता श्री निहालचंदजी जैन जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ व श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा उपस्थित थे। विद्वत्गणों के अन्तर्गत डॉ. भारिल्ल के साथ-साथ डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर आदि अनेक विद्वत्गण मंचासीन थे।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट का परिचय ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा ने दिया। मंचासीन समस्त अतिथियों का सम्मान शिविर के निर्देशक श्री अशोककुमारजी जैन जबलपुर ने तिलक लगाकर एवं माल्यार्पणकर किया।

शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री देवेन्द्रकुमारजी बड़कुल भोपाल ने, मंच का उद्घाटन श्री राजूभाई वाडीलाल अहमदाबाद ने एवं ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी जैन जयपुर ने किया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने शिविर के प्रारंभ व महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अधिक से अधिक विद्यार्थियों के हृदय में जिनवाणी अंकित करने पर ही जिनवाणी सुरक्षित रह पायेगी। अन्य अनेक महानुभावों ने भी शिविरों की उपयोगिता के संदर्भ में उद्बोधन दिया।

कार्यक्रम का संचालन श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा ने किया।

शिक्षण शिविर में प्रतिदिन गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के मांगलिक सी.डी. प्रवचन के साथ-साथ डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा दोनों समय समयसार की 47 शक्तियों पर एवं डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा प्रात:काल पंचास्तिकाय एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त रात्रि में पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड के प्रवचनों का भी लाभ प्राप्त हुआ।

प्रतिदिन चलने वाली प्रौढ कक्षाओं में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर द्वारा षट्कारक, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक (सम्यक्त्व के विभिन्न लक्षणों में समन्वय), पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर व पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर द्वारा छहढाला, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा समयसार (गाथा-2-3), डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा नयों का सामान्य स्वरूप एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका की कक्षा ली गई। सायंकाल ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन की कक्षा ली गई।

दोपहर की सभा में प्रतिदिन बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् महाविद्यालय के छात्र विद्वानों द्वारा प्रवचन तदुपरान्त आयोजित व्याख्यानमाला में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, पण्डित अनिलजी भिण्ड, डॉ. श्रीयांसजी सिंघई जयपुर एवं पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

प्रात:कालीन प्रौढ कक्षाओं में पण्डित रमेशजी, पण्डित सुनीलजी शास्त्री प्रतापगढ, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम इत्यादि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। इसके उपरान्त 6.30 बजे से 7.00 बजे तक प्रतिदिन जी-जागरण चैनल पर आने वाले समयसार ग्रन्थ पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का प्रसारण होता था।

शिविर के आमंत्रणकर्ता श्रीमती सुनीता शांतिनाथ की स्मृति में हस्ते श्री शांतिनाथ एवं श्री अजीत जैन बड़ौदा, श्री ब्रजलालजी दलीचन्दजी हताया मुम्बई, श्री भबूतमल चम्पालाल भंडारी बैंगलोर, श्री प्रेमचन्द सुपुत्र तन्मय, ध्याता बजाज कोटा, श्री राहुल कुमार नवीन भाई के.मेहता मुम्बई थे। इस अवसर पर पंचबालयति विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अशोककुमारजी उज्जैन, पण्डित कांतिकुमारजी, रमेशजी इन्दौर के साथ टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों ने संपन्न कराये।

शिक्षण शिविर के समस्त कार्यक्रम श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा एवं श्री अशोकजी जबलपुर के निर्देशन में संपन्न हुये।

अंतिम दिन दिनांक 05 अगस्त को श्री अशोकजी जबलपुर ने सभी विद्वानों एवं शिविरार्थियों का तथा श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई ने महाविद्यालय के विद्यार्थियों का सहयोग हेतु आभार प्रदर्शन किया। ●

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

देवलाली (महा.) : यहाँ कहान नगर में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 5 से 12 जुलाई तक पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री अष्टपाहुड महामंडल विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला मांगलिक शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के टेप प्रवचनों (प्रोजेक्टर द्वारा) के अतिरिक्त पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर में देशभर से लगभग 650 साधर्मियों ने पधारकर धर्मलाभ लिया।

डॉ. भारिल्ल भारत सरकार द्वारा सम्मानित

नई दिल्ली : यहाँ राष्ट्रीय संग्रहालय जनपथ में संस्कृत दिवस पर भारत सरकार द्वारा आयोजित भव्य समारोह में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को **'संस्कृत सेवा व्रती सम्मान'** दिनांक 10 अगस्त को प्रदान किया गया।

कार्यक्रम में श्री आर.पी. सिसोदिया (भाषा सचिव एवं कुलपति-मानव संसाधन विकास मंत्रालय) एवं डॉ. सत्यव्रतजी शास्त्री (प्रोफेसर) एवं श्री बी.के.सिंह (कुलसचिव) ने 1 लाख रुपये की राशि के अतिरिक्त शॉल ओढाकर, माला पहिनाकर, श्रीफल व प्रशस्ति-पत्र भेंटकर डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया। मंच पर इसके अतिरिक्त लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति प्रो. भास्कर मिश्र भी उपस्थित थे।

संचालक ने डॉ. भारिल्ल का परिचय देते हुए कहा कि आपने सरकारी नौकरी न करते हुए भी अपने संपूर्ण जीवन में 700 से अधिक संस्कृत विद्वान तैयार किये हैं, जो आज विभिन्न क्षेत्रों में संस्कृत की सेवा कर रहे हैं। आपने 70 से अधिक ग्रंथों का लेखन तथा संपादन किया है, जो अनेक भाषाओं में प्रकाशित होकर लाखों की संख्या में देश-विदेश में घर-घर पहुँच चुकी हैं।

ज्ञातव्य है कि भारत सरकार द्वारा यह सम्मान उन्हें दिया जाता है जो संस्कृत के विकास में अपना महनीय योगदान देते हैं। यह सम्मान पहली बार किसी जैन विद्वान को प्रदान किया गया है। समारोह में संस्कृत जगत के अनेक विद्वान व अधिकारीगणों सहित सैंकड़ों लोग उपस्थित थे।

यह पुरस्कार मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं राष्ट्रीय संस्कृत शिक्षा संस्थान तथा उसके द्वारा संचालित विश्वविद्यालय और लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ ने संयुक्त रूप से प्रदान किया है। **– डॉ. अनेकान्त जैन**

सिद्धचक्र मण्डल विधान संपन्न

टीकमगढ (म.प्र.) : यहाँ श्री 1008 सीमन्धर जिनालय (ज्ञानमन्दिरजी) में ज्ञानचन्द्र जैन अरविन्द शास्त्री संजय जैन (हल्ले) गुढा परिवार द्वारा गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की 125वीं जन्म जयन्ती के पावन वर्ष में श्री सिद्धचक्र मंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही टोडरमल महाविद्यालय के 10 शास्त्री विद्वान भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में टीकमगढ के अतिरिक्त बानपुर, महरौनी, मंडावरा, ललितपुर, सागर, छतरपुर, पन्न आदि अनेक नगरों से साधर्मियों ने पधारकर धर्मलाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पूर्ण हुये।

2015 का प्रशिक्षण शिविर मेरठ में

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 29 जुलाई को मेरठ से पधारे 80 साधर्मियों के प्रतिनिधि मण्डल ने विशाल सभामण्डप में उपस्थित सभी साधर्मी भाईयों एवं समाज को 2015 के प्रशिक्षण शिविर में मेरठ पधारने का आमंत्रण दिया।

इस अवसर पर दिल्ली प्रशिक्षण शिविर के प्रतिनिधि मण्डल के श्री जिनेन्द्र जैन एवं संयोजक श्री प्रमोदजी जैन ने धर्मध्वजा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को सौंपी एवं उन्होंने यह ध्वजा मेरठ प्रतिनिधि मण्डल को प्रदान की।

कार्यक्रम में मेरठ प्रतिनिधि मण्डल के सभी 80 सदस्यों ने गाजे-बाजे के साथ पधारकर मंचासीन सभी विद्वत्गणों का सम्मान किया एवं सभी साधर्मियों को **दिनांक 24 मई से 10 जून 2015 तक मेरठ में** आयोजित होने जा रहे पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित एवं अ.भा. जैन युवा फैडरेशन, मेरठ द्वारा आयोजित **49वें आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर** में पधारने का आमंत्रण दिया।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से प्रतिनिधि मण्डल के नेता मेरठ दिगम्बर जैन समाज के अध्यक्ष श्री सुरेशजी जैन 'ऋतुराज' को प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया एवं श्री प्रमोदजी जैन एडवोकेट और श्री प्रेमचंदजी जैन का भी अभिनन्दन किया गया।

उक्त अवसर पर श्री सुशीलकुमारजी गोदीका जयपुर, तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, श्री अशोकजी जबलपुर आदि महानुभाव मंचासीन थे।

मेरठ से पधारे प्रमुख प्रतिनिधिगण श्री प्रेमचंदजी जैन एवं श्री प्रमोदजी जैन एडवोकेट का श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने माल्यार्पण द्वारा एवं पण्डित शांतिकुमारजी पाटील व पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने तिलक लगाकर स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 30 अगस्त 2014 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। पर्व के प्रारंभ होने में लगभग 9 दिन का समय शेष है, तथापि दिनांक 21 अगस्त 2014 तक हमारे पास 410 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 21 अगस्त 2014 तक लिये गये निर्णयानुसार अब तक लगभग 406 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है –

विशिष्ट विद्वान : **1. कोटा :** बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा, **2. उदयपुर :** डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, **3. जयपुर :** पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, **4. दिल्ली (आत्मसाधना केन्द्र) :** डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, **5. नागपुर (विद्यालय) :** ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर, **6. सोनागिर :** पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन, विदिशा, **7. मुम्बई (दादर) :** ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन, खनियांधाना **8. सम्मेदशिखरजी** : पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी, उज्जैन, **9. दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट)** : ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद, **10. इन्दौर (रामाशा मन्दिर)** : ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री, खनियांधाना, **11. मुम्बई (भायन्दर)** : पण्डित राजेन्द्रकुमारजी, जबलपुर, **12. राजकोट** : पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, **13. अशोकनगर** : ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, **14. मुम्बई (भूलेश्वर) :** पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर, **15. कोलकाता** : पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन, आगरा, **16. अहमदाबाद (नवरंगपुरा)** : पण्डित शैलेशभाई शाह, तलौद, **17. हिम्मतनगर** : पण्डित राकेशजी शास्त्री, नागपुर, **18. कारंजा** : पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, मंगलायतन, **19. राजकोट** : पण्डित सुनीलजी जैनापुरे, राजकोट **20. उदयपुर (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित पीयूष कुमारजी शास्त्री, जयपुर, **21. मुम्बई (सीमन्धर जिनालय)** : पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री, भिण्ड, **22. सुरेन्द्रनगर** : ब्र. कैलाशचन्द्रजी अचल, **23. भिण्ड (परमागम मन्दिर)** : डॉ. दीपकजी जैन, जयपुर, **24. सोलापुर :** पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, **25. मलकापुर :** ब्र. संवेगी केशरीचंदजी धवल

विदेश : **1. शिकागो (अमेरिका)** : पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, **2. न्यूजर्सी (अमेरिका)** : डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर, **3. लन्दन** : पण्डित नीलेशभाई शाह मुम्बई, **4. कनाडा :** डॉ. जयन्तीलालजी जैन मंगलायतन विश्वविद्यालय।

मध्यप्रदेश प्रान्त

1. अशोकनगर : पण्डित हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, **2. आरोन :** पण्डित संजयजी इंजी खनियांधाना, **3. इन्दौर (ओम विहार)** : पण्डित सतीशजी कासलीवाल इन्दौर, **4. इन्दौर (कालानी नगर) :** पण्डित पदमचंदजी गंगवाल इन्दौर, **5. इन्दौर (क्लर्क कॉलोनी) :** पण्डित प्रकाशचंदजी छाबड़ा इन्दौर, **6. इन्दौर (गांधीनगर) :** पण्डित नीतेशजी शास्त्री आरोन, **7. इन्दौर**

(छावनी) : पण्डित जयकुमारजी कोटा, **8. इन्दौर (पलासिया) :** पण्डित आकेशजी छिन्दवाड़ा, **9. इन्दौर (रामचन्द्र नगर) :** पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली, **10. इन्दौर (रामाशा मन्दिर) :** ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री देवलाली, **11. इन्दौर (लश्करी मन्दिर) :** पण्डित सुरेशचंदजी टीकमगढ, **12. इन्दौर (साधना नगर) :** ब्र. सुनीलजी शास्त्री शिवपुरी, **13. उज्जैन :** ब्र. अमित भैया विदिशा, **14. कटनी :** पण्डित संतोषजी शास्त्री दमोह, **15 करेरा :** पण्डित किशनलालजी जैन कोलारस, **16. करेली :** पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, **17. कुचडौद :** पण्डित हुकमचंदजी सिंघई राघौगढ, **18. कोलारस (आदिनाथ) :** पण्डित रमनजी शास्त्री मौ, **19. कोलारस (चौधरी मौहल्ला) :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री दिल्ली, **20. खुरई :** पण्डित नंदकिशोरजी काटोल, **21. खुरई (तारण-तरण) :** पण्डित बाहुबली शास्त्री दमोह, **22. खैरागढ :** पण्डित प्रेमचंदजी खैरागढ, **23. गंजबसौदा (तारण-तरण) :** पण्डित अभिषेक मंगलार्थी उभेगांव, **24. गढाकोटा :** पण्डित अंकितजी शास्त्री जयपुर, **25. गुना (वीतराग-विज्ञान) :** पण्डित नागेशजी जैन पिड़ावा, **26. गौरझामर :** ब्र. राहुलजी गौरझामर, **27. ग्वालियर (थाठीपुर) :** पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, **28. ग्वालियर (फाल्के बाजार) :** पण्डित विवेकजी शास्त्री दलपतपुर व पण्डित अभयजी शास्त्री खडैरी, **29. ग्वालियर (सोडा का कुआँ) :** पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, **30 ग्वालियर (मुरार) :** पण्डित सुनीलजी शास्त्री ग्वालियर, **31. छिन्दवाड़ा (गोलगंज) :** ब्र. वासन्तीबेन देवलाली, **32. जबलपुर :** पण्डित सुनीलजी शास्त्री प्रतापगढ, **33. जबेरा :** पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद, **34. जावरा :** पण्डित फूलचंदजी मुक्किरवार हिंगोली, **35.36. दलपतपुर :** पण्डित निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर, **37. द्रोणगिरी :** पण्डित रमेशचंदजी शास्त्री जयपुर, **38. निसईजी :** पण्डित राजकुमारजी सर्राफ, **39. निसईजी (मल्हारगढ) :** पण्डित रतनलालजी होशंगाबाद, **40. परासिया :** ब्र. सुधा बेन छिन्दवाड़ा, **41. बड़नगर :** ब्र. श्रेणिकजी जैन जबलपुर, **42. बनखेड़ी :** पण्डित निवेशजी शास्त्री खडगापुर, **43. बीना :** पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री भिण्ड, **44. बेगमगंज :** पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, **45. भिण्ड (देवनगर) :** पण्डित मनोजकुमारजी शास्त्री करेली, **46. भिण्ड (परमागम मंदिर) :** डॉ. दीपकजी शास्त्री जयपुर, **47. भोपाल (कोहेफिजा) :** पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, **48. भोपाल (चौक) :** पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, **49. मकरोनिया (सागर) :** पण्डित निर्मलकुमारजी एडवोकेट एटा, **50. मगरौन :** पण्डित शुभमजी शास्त्री उभेगांव, **51. मन्दसौर (कालाखेत) :** पण्डित मिश्रीलालजी केकड़ी, **52.53. मन्दसौर (गौल चौराहा) :** पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा व डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, **54. रहली :** पण्डित राजेशजी जबलपुर, **55. रांझी (जबलपुर) :** पण्डित अभयजी शास्त्री सुनवाहा, **56. मगरौनी :** पण्डित शैलेषजी शास्त्री जिंतूर, **57.राघौगढ :** पण्डित अशोकजी शास्त्री मांगुलकर, **58.राघौगढ :** पण्डित धीरजजी शास्त्री जबेरा, **59. राघौगढ :** पण्डित संभवजी शास्त्री कोटा, **60. शहापुर (बुरहानपुर) :** पण्डित विमोशजी शास्त्री खड़ैरी, **61. शिवपुरी (परमागम मन्दिर) :** पण्डित अरुणजी मोदी सागर, **62. शिवपुरी (शान्तिनाथ**

मन्दिर) : विदुषी विमला जैन शिवपुरी, **63. शुजालपुर मण्डी :** पण्डित प्रमोदजी मोदी सागर, **64. सागर (तारण-तरण) :** पण्डित सुरेन्द्रजी पंकज छिन्दवाड़ा, **65. सागर (महावीर जिनालय) :** पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, **66. सिंगोली :** पण्डित राजेशजी शास्त्री सिंगोली, **67. सिरोंज :** पण्डित सजलजी शास्त्री सिंगोड़ी, **68. सिवनी :** पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर, **69. सुसनेर :** पण्डित अभिषेकजी सिलवानी, **70.71.72. सोनागिर :** पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित लालजीरामजी विदिशा एवं पण्डित मधुकरजी जलगांव, **73. अंजड :** पण्डित स्पर्शजी शास्त्री मेरठ, **74. छिन्दवाड़ा (गांधीगंज) :** ब्र.बहनें देवलाली, **75. निसई (मल्हारगढ) :** पण्डित अनुभवजी शास्त्री सिलवानी, **76. निसई (मल्हारगढ) :** विदुषी पुष्पाजी होशंगाबाद, **77. हरदा :** विदुषी कुसुमलताजी, **78. रतलाम (आदिनाथ चैत्यालय) :** पण्डित संजयजी शास्त्री परतापुर, **79. खनियांधाना :** डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, **80. खनियांधाना :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री देहगांव, **81. इन्दौर (माणकचौक) :** पण्डित गौरवजी शास्त्री चन्देरी, **82. सनावद (समवशरण मंदिर) :** पण्डित कुलभूषणजी शास्त्री, **83. सनावद (स्वाध्याय भवन) :** पण्डित अनुपमजी शास्त्री भिण्ड, **84. टीकमगढ :** पण्डित अंकितजी शास्त्री खनियांधाना, **85. अमलाई :** पण्डित योगेशजी शास्त्री देवरी, **86. विदिशा (सीमन्धर जिनालय) :** डॉ. आर.के. जैन, **87. विदिशा (माधौगंज) :** पण्डित चिन्मयजी शास्त्री कोटा, **88. बेगमगंज (तारण-तरण चैत्यालय) :** पण्डित प्रखरजी शास्त्री छिन्दवाडा, **89.90.91. गुना :** पण्डित अनिलकुमारजी खनियांधाना, पण्डित सुरेशचन्दजी शास्त्री कोलारस व पण्डित अमितजी शास्त्री भोपाल, **92. इन्दौर :** पण्डित अशोकजी शास्त्री रायपुर, **93. सागर :** पण्डित अखिलेशजी शास्त्री, **94. पटेरा :** पण्डित शेषकुमारजी छिन्दवाड़ा, **95.96. सोनागिर (विद्यालय) :** पण्डित विजयजी शास्त्री बोरालकर व पण्डित स्वतंत्रभूषणजी शास्त्री, **97. बदरवास :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री कोलारस, **98.गढाकोटा :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री भिण्ड, **99. भोपाल (कोलाड रोड) :** पण्डित संचितजी शास्त्री ग्वालियर, **100. बण्डा :** पण्डित जिनेशजी शास्त्री मुम्बई, **101. मौ :** पण्डित अजितजी फिरोजाबाद, **102. बीड :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री हीरापुर, **103.104. शहपुरा (भिटौनी) :** पण्डित उर्वीशजी शास्त्री पिड़ावा व पण्डित अनुभवजी शास्त्री उदयपुर, **105. अमायन :** पण्डित पवनजी शास्त्री मुम्बई, **106. दलपतपुर :** पण्डित अंकितजी गौरझामर, **107. द्रोणगिरी :** ब्र. महेन्द्रजी शास्त्री खनियांधाना, **108. घुवारा :** ब्र. रविजी ललितपुर, **109. केसली :** पण्डित रूपचंदजी बण्डा, **110. नरवर :** पण्डित आजादजी शास्त्री, **111. भानगढ (बीना) :** पण्डित सौरभजी शास्त्री फूप, **112. अम्बाह :** पण्डित राहुलजी जैन खड़ैरी, **113.खड़ैरी :** पण्डित चर्चितजी शास्त्री खनियांधाना, **114. विदिशा (अरिहंत विहार) :** पण्डित चितरंजनजी छिन्दवाड़ा, **115. विदिशा (किला अन्दर) :** डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली, **116.117. गुना (महावीर जिनालय) :** पण्डित स्वानुभव शास्त्री गुना व पण्डित सुकुमालजी शास्त्री गुना, **118.119. ग्वालियर (खातमी बाजार) :** पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी मौ व पण्डित पवनकुमारजी मौ, **120. नईसराय :** पण्डित शुद्धात्मजी

शास्त्री खरेह, 121. अभाना : पण्डित मनीषजी शास्त्री भिण्ड, 122. पंधाना : पण्डित अचलजी शास्त्री खनियांधाना, **123.124. सिलवानी :** पण्डित चेतनजी शास्त्री कोटा व पण्डित संयमजी शास्त्री कोटा, **125. होशंगाबाद :** पण्डित अक्षयजी शास्त्री उभेगांव,

उत्तरप्रदेश प्रान्त

1. अलीगढ (मंगलायतन): पण्डित अनुभवजी शास्त्री कानुपर, **2. अमरोहा :** पण्डित सचिनजी शास्त्री भगवां, **3. आगरा (धुलियागंज) :** पण्डित प्रशांतजी शास्त्री अमरमऊ, **4.5. एतमादपुर :** पण्डित प्रकाशचंदजी मैनपुरी व पण्डित आकाशजी शास्त्री अभाना, **6.7. करहल :** पण्डित शुभमजी मोदी खनियांधाना व पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री अमरमऊ, **8. कानपुर (किदवईनगर) :** पण्डित अभिषेकजी जोगी, **9.10. कानपुर (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित दर्शितजी शास्त्री बांदा व पण्डित देवांगजी शास्त्री मुम्बई, **11.12. कुरावली :** पण्डित सुनीलजी देवरी व पण्डित मयूरजी जैन सागर, **13. खतौली (चन्द्रप्रभ जिनालय) :** पण्डित अनिलजी इंजी इन्दौर, **14. खेकड़ा :** विदुषी प्रमिलाबेन इन्दौर, **15. गुरसराय :** पण्डित सन्देशजी शास्त्री मजगुंआ, **16. चिलकाना :** पण्डित शुभमजी शास्त्री सागर, **17.18. जैतपुरकलां :** पण्डित विवेकजी शास्त्री गडेकर व पण्डित अनुभवजी शास्त्री झालावाड़, **19. धामपुर :** पण्डित प्रदीपजी शास्त्री खतौली, **20. बड़ौत :** डॉ. नेमचंदजी जैन खतौली, **21. बानपुर :** पण्डित सचिन्द्रजी शास्त्री गडाकोटा, **22. मेरठ (तीरगरान) :** पण्डित सचिनजी अकलूज, **23. मैनपुरी :** पण्डित महेशचंदजी ग्वालियर, **24. रानीपुर (झांसी) :** पण्डित अपूर्वजी शास्त्री, **25. लखनऊ :** पण्डित ललितजी शास्त्री बण्डा, **26. ललितपुर :** पण्डित विनोदजी जबेरा, **27.28. शिकोहाबाद :** पण्डित हेमचंदजी शास्त्री शाहगढ एवं पण्डित ब्रजेन्द्रजी शास्त्री अमरमऊ, **29.30.31. अलीगढ (मंगलायतन) :** पण्डित सुधीरजी शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित आशीषजी शास्त्री दूनी, पण्डित पंकजजी शास्त्री बमनी, **32. भोगांव :** पण्डित नेमीचंदजी ग्वालियर, **33. मडावरा :** पण्डित गोकुलचंदजी सरोज ललितपुर, **34. रुडकी :** डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई, **35. सुलतानपुर :** पण्डित समकितजी शास्त्री गुना, **36.37. मुजफ्फरनगर :** पण्डित सतीशचंदजी पिपरई व पण्डित शुभमजी शास्त्री मडावरा, **38.39. सहानरपुर :** पण्डित आशीषजी शास्त्री मडावरा व पण्डित आकाशजी शास्त्री टडा, **40.41. खतौली :** पण्डित संदीपजी शास्त्री अमरमऊ व पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री छिन्दवाडा, **42. करनपुरा :** पण्डित सौरभजी शास्त्री खनियांधाना, **43. कुर्राचितपुर :** पण्डित विवेकजी शास्त्री बांसवाड़ा, **44.45. देहरादून (विकास नगर) :** पण्डित गौरवजी शास्त्री भिण्ड व पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री सागर, **46. फिरोजाबाद (हनुमानगंज) :** पण्डित सौरभजी शास्त्री, **47.48.49. फिरोजाबाद :** पण्डित विपिनजी शास्त्री, पण्डित अनुराजजी शास्त्री, पण्डित अरिहंतवीरजी शास्त्री

राजस्थान प्रान्त

1. अजमेर (वीतराग-विज्ञान भवन) : पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, **2. अजमेर (वैशाली नगर) :** पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर, **3. अलवर (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित

अंकितजी शास्त्री लूणदा, **4. अलीगढ :** पण्डित पदमचंदजी कोटा, **5. उदयपुर (गदिया मन्दिर) :** पण्डित खेमचंदजी उदयपुर, **6. उदयपुर (गायरियावास) :** पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, **7. उदयपुर (देवाली) :** पण्डित वीरचंदजी शास्त्री उदयपुर, **8. उदयपुर (नेमीनगर) :** डॉ. महावीरजी शास्त्री टोकर, **9. उदयपुर (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, **10. उदयपुर (सेक्टर 11) :** पण्डित गुलाबचंदजी बीना, **11. कानोड :** पण्डित वैभवजी शास्त्री गोरमी, **12. किशनगढ :** पण्डित सौरभजी शास्त्री कोलारस, **13. कुरावड :** पण्डित रंगलालजी जैन, **14. कुशलगढ (तेरापंथी) :** पण्डित अरविन्दजी शास्त्री ललितपुर, **15. कुशलगढ (शांतिनाथ) :** पण्डित अनुभवजी शास्त्री गौरझामर, **16. कूण :** पण्डित वैभवजी शास्त्री डडूका, **17. केलवाडा :** पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री बमनौरा, **18. बेगू :** पण्डित शुभमजी शास्त्री अलीगढ, **19. कोटा (इन्द्रविहार) :** पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, **20. कोटा (रामपुरा) :** ब्र.नन्हे भैया सागर, **21. चित्तौड़गढ (कुम्भानगर) :** पण्डित शीतलजी पाण्डे उज्जैन, **22. जयथल :** पण्डित ज्ञानचंदजी झालावाड़, **23. झालरापाटन :** पण्डित विक्रांतजी पाटनी, **24. झालावाड़ :** पण्डित सतेन्द्रजी शास्त्री बरायठा, **25. डबोक :** पण्डित अनुभवजी शास्त्री भिण्ड, **26. ढूंढारी (केकड़ी) :** पण्डित विवेकजी कोटा, **27. देवली (आदिनाथ) :** पण्डित सुमितजी शास्त्री कोलारस, **28. पिड़ावा :** पण्डित मनोजकुमारजी जैन जबलपुर, **29.30. पीसांगन :** पण्डित धर्मचंदजी जयथल व पण्डित ऋषभजी शास्त्री कुशलगढ, **31. बयाना (भरतपुर) :** पण्डित धनेन्द्रजी सिंहल ग्वालियर, **32.33. बांसवाड़ा :** पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर व पण्डित जगदीशजी पंवार उज्जैन, **34. बिजौलिया :** पण्डित देवेन्द्रकुमारजी मंगलायतन, **35. बीकानेर :** पण्डित विक्रांतजी भगवां, **36. बून्दी (गुरुनानक कॉलोनी) :** पण्डित अच्युतकान्तजी शास्त्री जसवंतनगर, **37. बून्दी (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित हर्षितजी शास्त्री खनियांधाना, **38. बोहेडा :** पण्डित पारसजी शास्त्री मौ, **39. बारा :** पण्डित दीपकजी शास्त्री केसली, **40. भीण्डर :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी, **41. भीलवाड़ा :** पण्डित विक्रान्तजी शास्त्री सोलापुर, **42. लकड़वास :** पण्डित सौरभजी शास्त्री मड़देवरा, **43. लवाण :** पण्डित विमलकुमारजी लाखेरी, **44. लाम्बाखोह :** पण्डित विकासजी शास्त्री बड़ामलहरा, **45. लूणदा :** पण्डित तपिशजी शास्त्री कानोड, **46. वल्लभनगर :** पण्डित अमितजी शास्त्री शाहगढ, **47. वेर :** पण्डित पीयूषजी शास्त्री गौरझामर, **48. साकरोदा :** पण्डित श्रीपालजी घाटोल, **49. सेमारी :** पण्डित सुनीलजी नाके निम्बाहेड़ा, **50. अजमेर (विधान हेतु) :** पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, **51. भीलवाड़ा :** पण्डित अरिहंतजी शास्त्री सिमरिया, **52.53. अलवर :** पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री फुटेरा एवं पण्डित प्रेमचंदजी शास्त्री अलवर, **54.55.56. दौसा :** पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री भोगांव, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी कोलारस एवं पण्डित प्रमोदजी शास्त्री टीकमगढ, **57. थानागाजी :** पण्डित शुभमजी शास्त्री कोटा, **58. कुचामनसिटि :** पण्डित राजेशजी शास्त्री गुढा, **59. कोटा (छावनी) :** श्री प्रेमचंदजी बजाज, **60. टोकर :** पण्डित विवेकजी शास्त्री मुम्बई, **61. अलवर :** पण्डित ऋषभजी मौ, **62. बोहेडा :** पण्डित पारसजी शास्त्री मौ, **63. कोटा (मुमुक्षु आश्रम) :** पण्डित पण्डित सौरभजी शास्त्री गढाकोटा, **64. थानागाजी :** पण्डित राजीवजी शास्त्री भिण्ड व पण्डित शुभमजी शास्त्री झालरापाटन, **65.66. जयपुर (टोडरमल स्मारक) :** पण्डित रमेशचंदजी लवाण व पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल जयपुर, **67. जयपुर (आदर्शनगर) :** पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, **68. जयपुर (जयजवान कॉलोनी) :** पण्डित मनीषजी कहान, **69. जयपुर (चितरंजन मार्ग) :** पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ,

गुजरात प्रान्त

1. अहमदाबाद (वस्त्रापुर) : डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय'विदिशा, **2. अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** पण्डित शैलेषभाई तलोद, **3. अहमदाबाद (मणीनगर) :** पण्डित प्रकाशचन्दजी झांझरी उज्जैन, **4. अहमदाबाद (पालडी) :** पण्डित मनीषजी शास्त्री इन्दौर, **5. अहमदाबाद (ओढव) :** पण्डित निखिलजी जैन भायंदर, **6. अहमदाबाद (मेघाणीनगर) :** विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया, **7. अहमदाबाद (आशीषनगर) :** पण्डित निर्मलकुमारजी सागर, **8. हिम्मतनगर :** डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, **9. राजकोट :** पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, **10. दाहोद :** पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी उज्जैन, **11. तलोद :** पण्डित रीतेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, **12. वापी :** पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, **13. अहमदाबाद (बहिरामपुरा) :** पण्डित आशीषजी शास्त्री सिलवानी, **14. अहमदाबाद (महावीर नगर) :** पण्डित मयंक ठगन टीकमगढ, **15. अहमदाबाद (नरोडा) :** पण्डित नरेशजी शास्त्री भगवां, **16. जहैर :** पण्डित राजेशजी शेठ मुम्बई, **17. सुरेन्द्रनगर :** ब्र.कैलाशचंदजी अचल ललितपुर, **18.19.20.21. अहमदाबाद (चैतन्यधाम) :** पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर, पण्डित सचिनजी शास्त्री गढाकोटा, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री दलपतपुर व पण्डित जयेशजी शास्त्री उदयपुर, **22.23. राजकोट :** पण्डित सुनीलजी शास्त्री जैनापुरे एवं पण्डित चेतनजी राजकोट, **24.25.26.27. सूरत :** पण्डित ज्ञाता झांझरी उज्जैन, पण्डित अरुणजी शास्त्री मौ, पण्डित नितिनजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री बड़ामलहरा, **28. अहमदाबाद (पालडी) :** पण्डित अभिषेकजी सिलवानी, **29. दाहोद :** पण्डित राकेशजी शास्त्री परतापुर, **30. सोनगढ (विद्यालय) :** पण्डित मेहुलजी शास्त्री कोलकाता, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री व पण्डित आत्मप्रकाशजी शास्त्री खडैरी, **31. दाहोद :** पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री गढी, **32. बडौदा :** पण्डित विनीतजी शास्त्री आगरा, **33. पावी जैतपुर :** पण्डित अर्पितजी शास्त्री ललितपुर, **34. जैतपुर :** पण्डित रजतकांतजी खनियांधाना, **35. मोरबी :** पण्डित चंदूभाई कुशलगढ।

महाराष्ट्र प्रान्त

1. मुम्बई (दादर) : ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, **2. मुम्बई (बोरीवली) :** ब्र. कल्पना बेन जयपुर, **3. मुम्बई (भायंदर वेस्ट) :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, **4. मुम्बई (मलाड) :** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, **5. मुम्बई (सीमंधर जिनालय) :** पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, **6. मुम्बई (अंधेरी) :** विदुषी स्वानुभूति जैन, **7.8. मुम्बई (एवरशाइन नगर) :** पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई व पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर, **9. मुम्बई (कांदीवली) :** पण्डित

प्रतीकजी शास्त्री भायंदर, **10. मुम्बई (घाटकोपर) :** पण्डित रतनचंदजी कोटा, **11. मुम्बई (डोम्बीवली) :** पण्डित सुमितजी शास्त्री दिल्ली, **12. मुम्बई (दहीसर) :** पण्डित चैतन्यजी शास्त्री कोटा, **13. मुम्बई (वसई रोड) :** पण्डित कमलेशजी मौ, **14. सोलापुर (आदिनाथ महाराज) :** पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, **15. हिंगोली :** पण्डित सुदीपजी इंजी.बीना, **16. हिंगोली (जिजा माता नगर) :** पण्डित पंकजजी शास्त्री संघई, **17. अकोला :** पण्डित आकाशजी शास्त्री चौधरी खनियांधाना, **18. अनसिंग :** पण्डित अमोलजी महाजन, **19. औरंगाबाद :** पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, **20. कारंजा (लाड) :** पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, **21. गजपंथा :** पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, **22. चन्द्रपुर :** पण्डित गणेशजी शास्त्री वायकोस, **23. चिखली :** पण्डित रोहनजी शास्त्री घाटे, **24. जलगांव :** पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, **25. डासाला :** पण्डित गौरवजी शास्त्री उखलकर, **26. देवलगांवराजा :** पण्डित मनोजकुमारजी मुजफ्फरनगर, **27. देवलाली :** पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, **28. नागपुर (इतवारी) :** पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, **29. नागपुर (विद्यालय) :** ब्र.यशपालजी जैन जयपुर, **30. नागपुर (विधान) :** पण्डित सुमितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, **31. नातेपुते :** पण्डित शीतलजी दोशी सोलापुर, **32. पुणे (चिंचवड) :** पण्डित जितेन्द्रजी राठी, **33. फालेगांव :** पण्डित रोहित सिदनाले कोल्हापुर, **34. बेलोरा :** पण्डित संकेतजी शास्त्री कलमनूरी, **35. वडोत तांगडा :** पण्डित शुभमजी शास्त्री हाथगिने, **36. वाशिम (जवाहर कॉलोनी) :** पण्डित विवेकजी जैन छिन्दवाड़ा, **37. शिरपुर :** पण्डित श्रीसांत अखलकर **38. सांगली :** पण्डित जीवराजजी पुणे, **39. सेलू :** पण्डित आराध्यजी शास्त्री मुम्बई, **40. गजपंथा (विधान हेतु) :** पण्डित अनिलजी शास्त्री 'धवल' भोपाल, **41. गजपंथा (मराठी विद्वान) :** पण्डित वर्धमान देशमाने शास्त्री, **42. देवलाली (विधान हेतु) :** पण्डित दीपकजी धवल भोपाल, **43. सेलू :** पण्डित रिमांशुजी शास्त्री, **44. कारंजा (आश्रम) :** पण्डित आलोकजी शास्त्री जालना, **45. कारंजा (वीरवाडी) :** पण्डित चिन्तामण शास्त्री औरंगाबाद, **46.47.48. नागपुर :** पण्डित मनीषजी सिद्धांत खड़ेरी, पण्डित रवीन्द्रजी महाजन बसमतनगर व पण्डित आशीषजी शास्त्री, **49.औरंगाबाद :** पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री रिसोड, **50.विहीगांव :** पण्डित प्रशांतजी पाटील, **51. बेलोरा :** पण्डित शांतिकुमार कलमनूरी, **52.मलकापुर :** ब्र. केसरीचंदजी धवल, **53.कोल्हापुर :** पण्डित सुमतिनाथजी शास्त्री, **54.कुर्डूवाडी :** पण्डित वीतरागजी शास्त्री, **55.अकलूज :** पण्डित दिलीपजी महाजन मालेगांव, **56.रिसोड :** विदुषी लता रोम, **57.बाहुबली (कुम्भोज) :** पण्डित नेमिनाथजी बालीकाई, **58. वरुड :** पण्डित कीर्तिकुमारजी मगदुम, **59. जिंतूर :** पण्डित प्रदीपजी महाजन शास्त्री, **60.61.62. पुणे (स्वाध्याय मण्डल) :** पण्डित कमलजी जबेरा, पण्डित अनिकेतजी शास्त्री व पण्डित अमोलजी अंबेकर, **63.64. औराद :** पण्डित अमोलजी रावजादे व पण्डित अजीतजी रावजादे, **65. जयसिंगपुर :** पण्डित विजयसेन पाटील।

अन्य प्रान्त

1. सम्मेदशिखरजी : पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, **2. कोलकाता :** पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, **3. बेलगांव :** डॉ. श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर, **4. बैंगलोर :** पण्डित

सुबोधजी सिंघई सिवनी, **5. एरनाकुल्लम (केरल) :** पण्डित सोनूजी शास्त्री फिरोजाबाद, **6. यमुनानगर (हरियाणा) :** पण्डित अंचलजी शास्त्री ललितपुर, **7.खेरागढ :** पण्डित प्रेमचंदजी देवलाली, **8. बेलगांव :** पण्डित सुधर्मजी मुडगली बेलगांव, **9. चम्पापुर :** पण्डित जागेशजी शास्त्री बंडा, **10.11. सन्मति नगर (प.बंगाल) :** पण्डित नितिनजी शास्त्री झालरापाटन व पण्डित विजयजी शास्त्री सिमरिया, **12. रायपुर (शंकरनगर) :** पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा, **13. रायपुर (चूडीलाईन) :** पण्डित नितिनजी शास्त्री खड़ैरी, **14. रायपुर :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मडदेवरा, **15. रायपुर :** पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री बडामलहरा, **16.17.18.19. सम्मेदशिखरजी :** ब्र. पुष्पलता झांझरी, ब्र. सुकुमाल झांझरी, समता झांझरी एवं ज्ञानधारा झांझरी, **20.21. कोलकाता :** पण्डित अमितजी शास्त्री फुटेरा व पण्डित विशालजी शास्त्री ग्वालियर, **22. बैंगलोर :** पण्डित विकासजी छाबड़ा इन्दौर, **23. सोनीपत :** ब्र. धमेन्द्रजी दिल्ली, **24.25. बेलगांव :** पण्डित अभिषेकजी उपाध्ये व पण्डित अभिजीत नेजकर दानोली, **26. मनेन्द्रगढ :** पण्डित नवीनजी शास्त्री उज्जैन, **27. नाहन :** पण्डित सिद्धार्थजी सिंघई मुंगावली, **28. कोलाघाट :** पण्डित प्रियमजी शास्त्री बडामलहरा व पण्डित सचिनजी शास्त्री, **29. कोयम्बटूर :** विदुषी तापसी शास्त्री।

दिल्ली

1. आत्मसाधना केन्द्र : डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, **2. आत्मसाधना केन्द्र :** ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, **3. विश्वास नगर :** पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी मुजफ्फरनगर व पण्डित सचिनजी शास्त्री सागर, **4. लक्ष्मीनगर :** पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर, **5. पारसविहार :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुरा, **6. पारस विहार :** पण्डित प्रियंकजी शास्त्री रहली, **7. रामनगर :** पण्डित मधुवनजी शास्त्री मुजफ्फरनगर, **8. सरस्वती विहार :** पण्डित राकेशजी लोनी, **9. ऋषभ विहार :** डॉ. वीरसागरजी शास्त्री।

इसके अतिरिक्त दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर पण्डित संदीपजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित सचिनजी शास्त्री सागर, पण्डित अतुलजी शास्त्री नौगामा, पण्डित दीपकजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित संजीवजी शास्त्री उस्मानपुरा, पण्डित राहुलजी जैन, पण्डित आशू जैन, पण्डित अविनाशजी बांसवाड़ा, पण्डित अनुरागजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित योगेशजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित अमितजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित विपिनजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित तन्मयजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित नीलेशजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित अर्पितजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित निखिलजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित सतीशजी शास्त्री महाराष्ट्र, पण्डित अंकितजी शास्त्री खडैरी, पण्डित शौर्यजी शास्त्री मण्डाना, पण्डित सुमितजी शास्त्री छिन्दवाडा, पण्डित अनिरुद्धजी शास्त्री महाराष्ट्र, पण्डित नीतेशजी शास्त्री झालरापाटन, पण्डित समकितजी बांझल गुना, पण्डित समकितजी मोदी दलपतपुर, पण्डित रीतेशजी शास्त्री पिडावा, पण्डित दिवान्शुजी शास्त्री पिडावा, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री मौ, पण्डित चेतनजी शास्त्री कोटा, पण्डित नवीनजी शास्त्री कोटा, पण्डित प्रासुकजी शास्त्री कोटा, पण्डित आदित्यजी शास्त्री कोटा।

शोक समाचार

(1) हिम्मतनगर (गुज.) निवासी पण्डित मीठाभाई मगनलाल दोशी का दिनांक 12 अगस्त को 81 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देह परिवर्तन हो गया।

पूज्य गुरुदेवश्री से आपका 32 वर्ष की आयु में परिचय हुआ और 35 वर्ष की उम्र में आपने ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया। आप अधिकतर सोनगढ में ही रहते थे। हिम्मतनगर मुमुक्षुमण्डल मंदिर व स्वाध्याय भवन की स्थापना में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

आप मुमुक्षु समाज के प्रमुख प्रवचनकार विद्वान थे। न केवल गुजरात अपितु देशभर में चलने वाली तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की गतिविधियों में एवं शिखरजी व चैतन्यधाम में बने संकुलों में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

ज्ञातव्य है कि आप पण्डित रजनीभाई दोशी के पिताजी थे। आपका पूरा परिवार तत्त्वज्ञान के संस्कारों से संस्कारित है।

(2) अशोक नगर (म.प्र.) श्रीमती सम्पतदेवी साहू धर्मपत्नी श्री एल.आर. साहु 'मधुप' का दिनांक 3 दिसम्बर 2013 को हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 500-500/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) रायपुर (छत्तीस.) निवासी श्रीमती विमलादेवी दूगड धर्मपत्नी श्री कन्हैयालालजी दूगड (सरदारशहर वाले) का दिनांक 30 जून को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 500-500/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

आवश्यकता

(1) धार्मिक कक्षाओं में अध्यापन हेतु एक पूर्णकालिक शास्त्री विद्वान की।

मासिक आय-35000 से 50000 रुपये।

संपर्क सूत्र - अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल, निर्देशक, जैन अध्यात्म स्टडी प्रोग्राम, सीमंधर जिनालय, कालबा देवी रोड़, मुम्बई फोन - 9821016988

(2) सिद्धक्षेत्र सोनागिर में निर्मित श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में सम्पूर्ण सुव्यवस्था देखरेख हेतु एक योग्य मैनेजर (प्रबंधक) की, श्री कुन्दकुन्द विद्यानिकेतन हेतु एक सीनियर प्राचार्य तथा वार्डन की तथा एक पुजारी बंधु की आवश्यकता है। उक्त महानुभाव की आवास, भोजनादि की सम्पूर्ण व्यवस्थाओं के साथ-साथ यथायोग्य पूर्ण वेतन दिया जायेगा।

संपर्क सूत्र - महामंत्री,9425054280, 9425148507

धन्यवाद !

सूरत (गुज.) निवासी श्री धनकुमारजी जैन जयपुर वालों के पौत्र के जन्म के उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 2 हजार रुपये प्राप्त हुये, एतदर्थ धन्यवाद !